ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 24 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 08 मई, 2023 से रविवार 14 मई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आर्यवीर दल/आर्य वीरांगना दल, आर्य प्रांतीय सभाओं, परोपकारिणी सभा, दयानन्द सेवाश्रम संघ, वानप्रस्थ आश्रम रोजड आदि आर्य संस्थाओं द्वारा आयोजित

ग्रीष्मकालीन शिविरों में अधिकाधिक भाग ले युवा शक्ति

–विनय आर्य

कम्पीटिशन के युग में उन्नति, प्रगति और सफलता के पथ पर आगे बढ़ने के लिए युवाओं को आर्य समाज के छठे नियम के अनुसार शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करनी ही चाहिए। क्योंकि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य तो है, किंतु यह तभी संभव है जब हम शारीरिक रूप से सक्षम होंगे, आत्मिक रूप से बलवान होंगे और सामाजिक स्तर पर संगठित होंगे।

आर्यवीर दल और आर्य वीरांगना दल आर्य समाज के युवाओं का महत्वपूर्ण संगठन है। इसकी स्थापना 26 जनवरी 1929 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा की गई थी। तब से लेकर अब तक हमारा यह संगठन आर्य समाज के नियम, मान्यताओं, परंपराओं और सिद्धांतों को लेकर राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण के कार्यों में अपना अनुपम योगदान देता आ रहा है। आर्य समाज के प्रचार प्रसार और सेवा कार्यों को गति प्रदान करने वाले आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल के युवाओं ने जब जब कोई राष्ट्रीय आपदा अथवा महामारी की विकट समस्या बनकर आई, तब तब अपने प्राणों की और अपने परिवारों की परवाह न करते हुए सेवा और समर्पण का गौरवशाली इतिहास रचा है।

कोरोना काल को अगर याद करें तो मौत के उस भयावह तांडव के विषय में सोचकर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह कैसा मंजर था जब अपनों ने अपनों का साथ छोड़ दिया था, सगे खून के सारे रिश्तों की माला टूटकर बिखर गई थी, पिता के मृत शरीर को श्मशान के बाहर छोड़ने में पुत्र और परिवार बचकर निकलने में ही बुद्धिमानी समझ रहे थे। ऐसी विकट स्थिति में आर्य समाज के वीरों ने अपनी जान की बाजी लगाकर कोरोना से ग्रसित मृतकों का घी और सामग्री से आहुति देकर अंतिम संस्कार किया और पर्यावरण की रक्षा की। यह तो आर्यवीर दल की एक कुछ दिन पुराने सेवा कार्य का कीर्तिमान है। अगर सेवा समर्पण का पूरा इतिहास देखा जाए तो चाहे भूकंप की त्रासदियां हों या बाढ़ का प्रकोप हो अथवा महामारी की चुनौती हर स्थान पर आर्यवीर दल ने अपना शत प्रतिशत योगदान देकर अग्रणी भूमिका निभाई है।

> **“आजकल हमारे बच्चे क्या सीख रहे हैं और हम उन्हें क्या सिखा रहे हैं, यह हमें अवश्य सोचना-विचारना चाहिए। जिन खेतों में बीज नहीं बोए जाते वहां खरपतवार तथा झाड़-झंखाड उग ही जाते हैं। अत: शिविर में बच्चों को ऐसे शिक्षाप्रद संस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिनसे उन्हें जीवन भर संपोषण प्राप्त होता है। और ये सभी शिक्षाएं, संस्कार बच्चों को खेल खेल में सिखाए जाते हैं। वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, विशेषज्ञों द्वारा दिए गए संस्कार बच्चों को महान धरोहर के रूप में प्राप्त होते हैं, जो उनके जीवन भर काम आते हैं। शिविर में भाग लेने वाले बच्चे मातृ-पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, राष्ट्र भक्त बनकर अपना, अपने माता-पिता का और देश का नाम रोशन करते हैं।”**

ग्रीष्मकालीन चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविरों की विस्तृत जानकारी एवं उपयोगिता के लिए पृष्ट नं0 5 देखें

बंधुओ, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के 2 वर्षीय आयोजनों के क्रम में सार्वदेशिक आर्यवीर दल और आर्य वीरांगना दल तथा प्रांतीय स्तरों पर ग्रीष्मकालीन शिविरों का बिगुल बज चुका है। इन सभी शिविरों में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के माननीय अध्यक्ष स्वामी देवव्रत जी से प्रशिक्षण प्राप्त सुयोग्य शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा आर्य वीरों, वीरांगनाओं को चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। आर्य परिवारों के बच्चों के लिए यह एक स्वर्णिम अवसर है। अत: अपने बच्चों के प्रति जो आपका मोह है उसे त्यागकर, उनके उज्जवल भविष्य के लिए आवासीय शिविरों में भेजने का प्रयास अवश्य ही करें। क्योंकि आधुनिक परिवेश में किशोर, युवा और बच्चों को जो विपरीत वातावरण प्राप्त हो रहा है, मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से जो कुछ वें सीख रहे हैं उसके विषय में तो कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इस विषय में तो आप सब जानते हैं। लेकिन हमें अपने बच्चों को छुई मुई का ऐसा पौधा नहीं बनाना चाहिए, कि कोई उंगली दिखाए और वे मुरझा जाएं, हमें तो उन्हें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक रूप से इतना मजबूत बनाना चाहिए कि वे हर हाल में, हर स्थिति में मजबूत मनोबल के साथ सफलता का परचम लहरा सकें। जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकें।

शिविर की आदर्श दिनचर्या

मौसम चाहे कोई भी हो हर मौसम की सुबह सुहानी होती है। सुबह दिवस का बचपन होता है, जिस व्यक्ति का बचपन स्वस्थ और तरोताजा होता है उसका पूरा दिन सफल होता ही होता

- शेष पृष्ठ 5 पर

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा 40वां वैचारिक क्रांति शिविर

दिनांक– 19 मई से 28 मई 2023 तक

स्थानः– आर्य समाज मंदिर, मेन बाजार, रानी बाग
उद्घाटन समारोहः– शुक्रवार 19 मई 2023 सायं 06:00
संकल्प दिवसः– रविवार 21 मई 2023 प्रात: 10:00
समापन समारोहः– रविवार 28 मई 2023 सायं 4:00 बजे

शिविर में भाग लेने के लिए शिविर्थी संपर्क करें।
जोगेन्द्र खट्टर 9810040982, आचार्य दया सागर 9425944843

कार्यक्रमानुसार आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

वेदवाणी-संस्कृत

देवासुर संग्राम में आत्मदेव का विजय

वेद-स्वाध्याय

त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।
त्वां देवा अविभ्युषस् तुज्यमानास आविशुः ॥
-ऋ. 1 । 11 । 5
ऋषिः- जेतामाधुच्छन्दसः॥ देवता- इन्द्रः ॥ छन्दः- अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **अद्रिवः**=हे वज्रवाले इन्द्र! **त्वम्**=तुम **गोमतः**=गौओं को रोक रखने वाले **वलस्य**=वल के **बिलम्**=बिल को **अपावः**=खोल देते हो। तब **देवाः**=सब देव **तुज्यमानासः**=हिंसित होते हुए, काँपते हुए भी **अविभ्युषः**=निर्भय हुए-हुए **त्वाम्**=तुझमें फिर **आविशुः**=प्रविष्ट होने लगते हैं।

विनय- हे इन्द्र! तुम 'वल' असुर का संहार कर उस द्वारा छिपा रखी हुई देवों की गौओं को फिर देवों को दिला देते हो। तुम्हारा यह नित्य इतिहास हममें से प्रत्येक जीव में दोहराया जा रहा है। हमारे आत्मिक ऐश्वर्य ऐसे खोये जा चुके हैं कि हमें उनके बारे में कुछ पता ही नहीं है। यह हमें ढकने वाला[1] 'वल' अज्ञानानुसार ही है, जिसने हमारी आत्मिक ऐश्वर्यों की गौओं को छिपा रखा है। इसके वशीभूत हुए हम लोग अज्ञाननिद्रा में न जाने कब से पड़े सो रहे हैं, परन्तु हे इन्द्र! जब तुम इस अज्ञानान्धकार का संहार कर देते हो, अज्ञान मेघ का भेदन कर देते हो, गौओं को छिपा रखने वाले इस 'वल' के बिल को खोल देते हो, हमारी प्रसुप्तावस्था में पड़ी सुषम्ना के विवर का उद्घाटन कर देते हो, शक्ति को जगा देते हो, तब जो आश्चर्यमय अवस्था आती है वह तो स्वयं देखने ही योग्य है। तब वे छिपी गौएँ निकल पड़ती हैं, एक-से-एक अद्भुत आत्मिक ऐश्वर्य प्रकट होने लगते हैं। अन्दर प्रकाश हो जाता है, आनन्ददायक कम्पन होते हैं और आनन्द की लहरें उठती हैं तथा हे आत्मन्! तुम्हारी सब दिव्य शक्तियाँ आ आकर तुमसे संयुक्त होने लगती हैं। हे इन्द्र! हम तुम्हारे पराक्रम की क्या कथा कहें? वलासुर तो अपने अन्धकार द्वारा तुम्हारे देवों को उनके ऐश्वर्यों से पृथक् कर चुका होता है और तुम्हारे इन देवों को तुमसे भी विच्छिन्न कर चुका होता है, पर ऐसी अवस्था पहुँच जाने पर भी तुम अपने वज्र से जब उसका संहार करने लगते हो एकदम प्रकाश की धाराएँ बहने लगती हैं और उस प्रकाश में वे सब ऐश्वर्य देवों को फिर मिल जाते हैं एवं ऐश्वर्ययुक्त हुए ये देव कभी-कभी 'वल' के प्रहारों से मारे जाते हुए और काँपते हुए भी अब निर्भय होकर तुममें प्रविष्ट होने लगते हैं, आ आकर तुमसे संयुक्त होने लगते हैं।

-:साभार:- वैदिक विनय

1. 'वलो वृणीतेः' -निरुक्त 6-2।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

क्या है, 'द केरला स्टोरी' इसको देखना क्यों है जरूरी?

कश्मीर फाइल्स की तर्ज पर 'केरला स्टोरी' विरोध की समीक्षा

भारत में फिल्मों का अपना अलग चरित्र और इतिहास है। यहां समय समय पर भारत की एकता, अखंडता, वीरता, धीरता, मातृपितृ भक्ति, देशभक्ति, ईश्वर भक्ति, महापुरुषों के तप, त्याग, बलिदान, समर्पण का गौरवशाली इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, और संस्कारों पर कुठाराघात करने वाली, पाश्चात्य दुर्गुण दुर्व्यसनों को परोसने वाली फिल्मों को देखकर लोग केवल मनोरंजन मात्र समझने की भूल लंबे समय से करते आ रहे हैं और ये भोले लोग यह हेतु भी देते हैं कि इसमें गलत ही क्या है, जिसको देखना है देखे, जिसे नहीं देखना न देखें? फिल्म तो फिल्म है, फिल्मों का विरोध नहीं करना चाहिए, इसके लिए लोगों का यह भी कहना होता है कि सबको अपनी अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार है, जिसे जो करना है, जो कहना है, जो देखना है वह उसकी अपनी स्वतंत्रता है, जिसे कोई छीन भी नहीं सकता। परिणाम स्वरूप फिल्मों के माध्यम से एक वर्ग विशेष को ऊपर उठाने के लिए लंबे समय से, नाम, भाषा, बोलचाल, पहनावा, संगीत, डायलॉग और आस्था को केन्द्र में रखकर, सर पर टोपी, गले में ताबीज, गंडे, क्रास का चिन्ह, पीर, मजार, मस्जिद, चर्च, पादरी, मौलवी, आदि को बढ़ा चढ़ाकर, उल्टा-सीधा दिखा, दिखाकर युवा पीढ़ी को भरमाया जाता रहा है। कहने को तो हर फिल्म सेंसर बोर्ड की कसौटी से होकर गुजरती है लेकिन फिर भी अच्छाई और बुराई, झूठ और सच तो सभी जानते हैं।

इसके लिए आर्य समाज हमेशा से हिंदुओं को जागरूक भी करता रहा है कि जागो, होश में आओ, अपने गौरवशाली इतिहास को भूलने की गलती मत करो, फिल्मों के निर्माता एक सोचे समझे ढंग से षड्यंत्र के द्वारा भारत के उज्जवल भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। लेकिन जागता भी वही है जो ठीक से सोया होता है, हिंदू तो हमेशा से आधा अधूरा ही जागता और सोता आया है। इसलिए यह आर्य समाज की कल्याणकारी आवाज को नजरंदाज करता रहा है।

"आज समाज में कुछ फिल्म निर्माता निर्देशक जागे हैं, अपने देश और धर्म के ऊपर हुए अन्याय, अत्याचार को दिखाने का, सोए हुए समाज को जगाने का प्रयास कर रहे हैं। कश्मीर में हिंदू अत्याचारों के खिलाफ बनी 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म को देखकर पता चलता है कि किस तरह अपने ही देश के एक सुंदर राज्य कश्मीर से, अपने घर-बार को छोड़कर, अपने परिवार, बहु बेटियों और बच्चों की, बेइज्जती और अपमान का कड़वा घूंट पीकर, एक वर्ग विशेष द्वारा अत्याचार, अनाचार, पापाचार और भ्रष्टाचार का शिकार होकर, बेबसी और लाचारी से दूसरे राज्यों में दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर हो गए थे। इस क्रम में अब और भी राज्यों में हुई त्रासदी पर फिल्में बन रही हैं, जिनमें से केरल भी एक ऐसा ही राज्य है। 'द केरला स्टोरी' की सच्चाई को देखने से पहले ही कुछेक तथाकथित सेक्युलर लोगों के पेट में दर्द शुरू हो गया है। क्योंकि उन्हें तो हर हाल में और हर स्थिति में केवल वोट की राजनीति करनी है। देश, धर्म और संस्कृति से उन्हें क्या लेना देना? मानवता की पुकार भी उनके कानों तक नहीं पहुंचती।"

आज समाज में कुछ फिल्म निर्माता निर्देशक जागे हैं, अपने देश और धर्म के ऊपर हुए अन्याय, अत्याचार को दिखाने का, सोए हुए समाज को जगाने का प्रयास कर रहे हैं। कश्मीर में हिंदू अत्याचारों के खिलाफ बनी 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म को देखकर पता चलता है कि किस तरह अपने ही देश के एक सुंदर राज्य कश्मीर से, अपने घर-बार को छोड़कर, अपने परिवार, बहु बेटियों और बच्चों की, बेइज्जती और अपमान का कड़वा घूंट पीकर, एक वर्ग विशेष द्वारा अत्याचार, अनाचार, पापाचार और भ्रष्टाचार का शिकार होकर, बेबसी और लाचारी से दूसरे राज्यों में दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर हो गए थे। इस क्रम में अब और भी राज्यों में हुई त्रासदी पर फिल्में बन रही हैं, जिनमे से केरल भी एक ऐसा ही राज्य है। 'द केरला स्टोरी' की सच्चाई को देखने से पहले ही कुछेक तथाकथित सेक्युलर लोगों के पेट में दर्द शुरू हो गया है। क्योंकि उन्हें तो हर हाल में और हर स्थिति में केवल वोट की राजनीति करनी करानी है। देश, धर्म और संस्कृति से उन्हें क्या लेना देना? मानवता की पुकार भी उनके कानों तक नहीं पहुंचती।

सुदीप्तो सेन द्वारा निर्देशित और विपुल अमृतलाल शाह द्वारा निर्मित फिल्म 'द केरला स्टोरी' को 'आतंकवाद' फैलाने वाला बताते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. नड्डा ने कहा कि यह एक नए प्रकार का आतंकवाद है, जो बिना गोला-बारूद के काम करता है। नड्डा रविवार को बेंगलुरु के गरुड़ मॉल में फिल्म की एक विशेष स्क्रीनिंग में शामिल हुए, जहां वे आगामी विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी के लिए प्रचार भी कर रहे थे। पत्रकारों से बात करते हुए नड्डा ने कहा, ''एक नए प्रकार का आतंकवाद है जो बिना गोला-बारूद के है, 'द केरल स्टोरी' जहरीले आतंकवाद को उजागर करती है। इस तरह के आतंकवाद का संबंध किसी राज्य या धर्म से नहीं है" यह एक ऐसे प्रकार का आतंकवाद है जो बिना गोला-बारूद के काम करता है।

इससे पहले चुनावी राज्य कर्नाटक में एक रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि 'द केरला स्टोरी' फिल्म आतंकी साजिश पर आधारित है, प्रधानमंत्री ने कहा कि फिल्म 'द केरला स्टोरी' आतंकवाद के कुरूप सच को दिखाती है और आतंकवादियों के मंसूबों का पर्दाफाश करती है। उन्होंने कहा कि फिल्म एक आतंकी साजिश पर आधारित है। उन्होंने कांग्रेस पार्टी पर भी निशाना साधा और कहा कि कांग्रेस ने वोट बैंक के लिए आतंकवाद को पनाह दी है। पी.एम. ने कहा, "आतंकवाद पर बनी फिल्म का कांग्रेस विरोध कर रही है और आतंकवाद के साथ खड़ी है। कांग्रेस ने वोट बैंक के लिए आतंकवाद का बचाव किया है।"

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई

- शेष पृष्ठ 7 पर

संस्कार बोध

यज्ञोपवीत या जनेऊ

-पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

"वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से प्रेरणा लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों में गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के चिंतन-लेखन का अपना स्थान है। उन्होंने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। यहां पर प्रस्तुत है उपाध्याय जी द्वारा रचित यज्ञोपवीत या जनेऊ पुस्तक से क्रमशः लेख, पाठक इससे यज्ञोपवीत के महत्व को जानें और इस विशेष संस्कार से संस्कारित हों।"

वैदिक सोलह संस्कारों में दो को सबसे अधिक गौरवान्वित समझा जाता है, एक यज्ञोपवीत और दूसरा विवाह। रहे अन्य। उनका मान्य तो शायद विरले ही घरों में होगा। परन्तु आजकल लोग इन संस्कारों से भी तंग आ गए हैं। विवाह के बन्धनों से मुक्त होने का घोर प्रयत्न पाश्चात्य देशों तथा उनके अन्धविश्वासी अनुयाई पूर्व देशीय युवकों में भी रहा है। फिर बिचारा यज्ञोपवीत किस गिनती में है।

भाव इतना बदल गया-कुछ समय पूर्व यज्ञोपवीत ऊंच और नीच जातियों का भेदक चिन्ह समझा जाता था और बहुत-सी छोटी समझी जाने वाली जातियां बड़े चाव से अपना यज्ञोपवीत संस्कार करा के उच्च जातियों में मिलने का प्रयास किया करती थीं परन्तु कालान्तर में भाव बदल गया और जिन जातियों ने यवनों के अत्याचार के समय में अपने रक्त से अपने जनेऊ की रक्षा की थी उन्हीं की संतान तीन धागों का बोझ कन्धों पर न सहार सकीं और उसे व्यर्थ का ढोंग समझ कर तोड़ने लगी।

केश्वाचन्द्र सेन ने जनेऊ तोड़ा- इस युग के प्रसिद्ध बंगाली विद्वान् श्री बाबू केशवचन्द्र सेन ने सबसे पहले जनेऊ तोड़ फेंकने का श्रेय अपने सिर लिया था और उनके अनुसरण रूप में उनके नव-विधान धर्मानुयायी यज्ञोपवीत को उसी घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे जिससे चोरी आदि अन्य कर्म देखे जाते हैं। ब्रह्म समाज की भी कुछ दिनों तक यह विशेषता रही कि कोई यज्ञोपवीत-धारी उनकी वेदी पर चढ़ नहीं सकता था। शनैः शनैः जनेऊ को लेकर आजकल कभी-कभी कान में यह आश्चर्यजनक भनक भी पड़ जाती है कि अमुक आर्य-सामाजिक विद्वान् यज्ञोपवीत पर विश्वास नहीं रखते और उसे ढोंग समझते हैं।

जो वैदिक धर्मी नहीं उनके विषय में तो सुगमता से समझ में आ जाता है कि उनकी यज्ञोपवीत पर श्रद्धा न हो। परन्तु जिस वेदाध्ययन का अधिकार ही मनुष्य को यज्ञोपवीत संस्कार से संस्कृत होने के पश्चात् प्राप्त होता है उसको वेदानुकूल न मानना अवश्य आश्चर्यजनक प्रतीत होता है।

यज्ञोपवीत संस्कार के विषय में निम्न प्रश्न हैं-

1. क्या वेदों में जनेऊ धारण करना है?
2. क्या वेदों के पीछे के वैदिक ग्रन्थों में यज्ञोपवीत का वर्णन है?
3. यज्ञोपवीत का क्या उपयोग है?
4. यज्ञोपवीत धारण न करने में क्या हानि है?
5. यज्ञोपवीत किसको धारण करना चाहिए?
6. क्या यज्ञोपवीत के समान कोई संस्कार अन्य धर्मों में भी है?

मैंने कुछ ब्राह्मण कुलोत्पन्न आर्यसमाजी पण्डितों को छः तार का यज्ञोपवीत पहने हुए देखा है। इनमें से दो तो विधुर हैं। यह उनके जन्मजात पौराणिक संस्कारों के कारण है। यह धर्म नहीं, दुराग्रह व हठ है। 'जिज्ञासु' और उनकी जनेऊ से किस प्रकार तुलना की जा सकती है? कुछ लोगों का कहना है कि वेदों में जनेऊ का वर्णन नहीं है। इसलिए सबसे पहले हम इसी को लेते हैं।

स सूर्यस्य रश्मिभिः परिव्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे।
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम्॥

(ऋ. मण्डल 9, सूक्त 86, मन्त्र 32)

यहां उस ब्रह्मचारी का वर्णन है जो गुरुकुल से निकल कर संसार में विद्या का प्रचार करता है-

(स) वह ब्रह्मचारी (यथा विदे) ज्ञान पूर्वक (त्रिवृतं तन्तुं तन्वानः) तीन धागे का जनेऊ धारण करता हुआ सूर्यस्य रश्मिः परिव्यत) सूर्य की किरणों के समान प्रकाश से प्रकाशित होता है। (ऋतस्य प्रशिषः नवीयसीः नयन्) ईश्वर के सृष्टि-नियम की प्रशंसा युक्त नई-नई बातों को फैलाता हुआ (जनीनाम् पतिः) मनुष्यों का नेता (निष्कृतम् उपयाति) स्वतन्त्र विचरता है। इस मन्त्र में स्पष्ट वर्णन है कि ब्रह्मतेजधारी ब्रह्मचारी तीन धागे का जनेऊ धारण करता है।

बाल बोध

बच्चों के लिए वैदिक प्रश्नोत्तरी

प्र.1 शिक्षा किसे कहते हैं?
उ. जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको 'शिक्षा' कहते हैं।
प्र.2 विद्या किसे कहते हैं?
उ. प्रकृति से लेकर परमात्मा तक सब विषयों को जानकर उनसे लाभ लेना 'विद्या' कहलाती है।
प्र.3 नैतिक शिक्षा किसे कहते हैं?
उ. जिसमें मानवता सिखाई जाए, जैसे- ईमानदारी, राष्ट्रभक्ति, न्याय, दया, ब्रह्मचर्यादि, इसे 'नैतिक शिक्षा' कहते हैं।
प्र.4 अविद्या किसे कहते हैं?
उ. विपरीतज्ञान को 'अविद्या' कहते हैं, जैसे- सुखदायी विद्या प्राप्ति में कष्ट व दुखदायी व्यसनों में सुख समझना आदि।
प्र.5 सभ्यता किसे कहते हैं?
उ. जिस व्यवहार को सत्पुरुष श्रेष्ठ मानते हैं, वह 'सभ्यता' है, जैसे- सच बोलना, मधुर बोलना, सेवा करना आदि।
प्र.6 धर्मात्मता किसे कहते हैं?
उ. आत्मा को न्याय-दयादि गुणों से युक्त करना 'धर्मात्मता' है।
प्र.7 जितेन्द्रियता किसे कहते हैं?
उ. सुख-दुःख,निंदा-स्तुतिलाभ-हानि में समता 'जितेन्द्रियता' है।
प्र.8 मनुष्य ज्ञानवान कब होता है?
उ. जब तीन उत्तम शिक्षक हों।
प्र.9 तीन उत्तम शिक्षक कौन हैं?
उ. 1. माता 2. पिता 3. आचार्य = शिक्षक। (1)
प्र.10 गुरु किसे कहते हैं?
उ. माता-पिता व ज्ञानदाता को ही 'गुरु' कहते हैं।
प्र.11 माता ही सर्वोत्तम गुरु क्यों है?
उ. संतानहित की भावना व प्रेम सर्वाधिक होने से।
प्र.12 क्या भूत-प्रेतों से डरना ठीक है?
उ. नहीं, भूत-प्रेत नामक कोई चेतन प्राणी नहीं होता।
प्र.13 झाड-फूंक से रोग ठीक होते हैं?
उ. नहीं, ये विज्ञान विरुद्ध, अंधविश्वास व छल-कपट है।
प्र.14 छल-कपट किसे कहते हैं?
उ. दूसरों को धोखा देकर स्वार्थ सिद्ध करना 'छल-कपट' है।
प्र.15 क्या जन्मकुंडली सच होती है?
उ. नहीं, जन्मकुंडली में लिखी बातें झूठी होती हैं।
प्र.16 क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?
उ. नहीं, गणित ज्योतिष पूर्णसत्य, फलित ज्योतिष झूठ है।
प्र.17 क्या राहु, केतु, शनि दुख देते हैं?
उ. नहीं, ये एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम हैं।
प्र.18 राहु किसे कहते हैं?
उ. दुष्टों से छुड़ाने वाले ईश्वर को ही 'राहु' कहते हैं।
प्र.19 केतु किसे कहते हैं?
उ. सबके आधार व दुःखनाशक ईश्वर को 'केतु' कहते हैं।
प्र.20 जन्मकुंडली झूठी होती है, इसे सिद्ध कीजिए?
उ. उदा० जैसे- एक ही समय में जन्में अनेक बच्चों का ज्ञान, बल, सुख-दुःख व भोग एकसा नहीं होता।
प्र.21 क्या गंडे, ताबीज, लॉकेट पहनने, पशुओं की बलि चढ़ाने से दुःख-दरिद्रता मिटती है?
उ. नहीं, अपितु इससे लोग और अधिक वहमी, कायर, हिंसक, दरिद्र व अंधविश्वासी बन जाते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजना – वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प

आर्य समाज के प्रचार और विस्तार को गति देते युवा सम्वर्धक

वर्तमान में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पूरे देश में और विदेशों में भी समस्त आर्य जगत को महसूस हो रही है। किंतु आधुनिक परिवेश में वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं का केवल आर्य समाजों की परिधि में प्रचार करने से कार्य चलने वाला नहीं है, क्योंकि

संपूर्ण विश्व में अनेक अन्य संस्थाएं, संगठन अपने अपने मत और संप्रदायों के प्रचार-प्रसार में पूरी तकनीकि सुविधाओं के साथ रात दिन लगे हुए हैं। इसलिए आर्य समाज को भी अपनी पूरी शक्ति के साथ वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का विस्तार और प्रचार करना ही होगा। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प योजना के अंतर्गत आर्य समाज के प्रचार को मजबूती देने हेतु सुयोग्य और समर्पित युवा सम्वर्धकों की एक मजबूत टीम तैयार की है। दिल्ली और दिल्ली से बाहर सुदूर क्षेत्रों में ये समर्पित नौजवान जो आर्य समाज किन्हीं भी कारणों से सक्रिय रूप से भूमिका नहीं निभा पा रही हैं अथवा बिल्कुल असमर्थ महसूस हो रही हैं, वहां पर उन्हें पुन: सक्रिय करना और जिन क्षेत्रों में आर्य समाज नहीं हैं, वहां पर आर्य समाजों की स्थापना करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

> **“वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प में इन योग्य नौजवानों को आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए हर आवश्यक साधन एवं प्रशिक्षण देकर तैयार किया गया है। जो किन्ही कारणों से आर्य समाज कम सक्रिय हैं, उनको पुन: सक्रिय करने तथा आर्य समाज मंदिरों में विभिन्न सेवा प्रकल्पों को मजबूत करने की दिशा देने का कार्य ये सभी पूरी निष्ठा के साथ कर रहे हैं। इसके अलावा जिन स्थानों पर आर्य समाज नहीं हैं, वहां के लोगों के बीच आर्य समाज के कार्यों एवं विचारों को पहुंचाने का कार्य भी इनके माध्यम से सुचारू रूप से संभव हो रहा है। इन सभी प्रचारक साथियों के पास वाहन, मोबाइल, यज्ञ सेट, माईक आदि की समस्त सुविधाएं हैं। साथ ही यज्ञ करना, प्रवचन देना, भजन और शारीरिक प्रशिक्षण देना, जैसे योग, खेल आदि सिखाने की भी पूर्ण योग्यता इनके पास है। स्लम बस्तियों के हजारों परिवार आज यज्ञ आदि कार्यों से जुड़ चुके हैं। इन क्षेत्रों में नशा, अंधविश्वास, कुरीतियों के विरुद्ध चर्चा करके उन्हें यज्ञ, सत्संग आदि पवित्र कार्यों से युवाओं को जोड़ा जा रहा है। इन साथियों के माध्यम से हजारों बच्चे आर्य वीर दल की शाखाओं में आ रहे हैं और लगातार प्रेरित हो रहे हैं।”**

वर्तमान में आर्य समाज के विशाल संगठन को मजबूती प्रदान करने वाले प्रतिभाशाली युवा-सम्वर्धकों की संख्या 50 से अधिक है। जिनमें से कुछ सम्वर्धक दूर-दराज के आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं और कुछ युवा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में समर्पित भाव से सेवा कार्यों में संलग्न हैं। इन सभी सम्वर्धकों का एक ही उद्देश्य है कि आर्य समाजों में, आर्य विद्यालयों में अथवा अन्य आर्य संस्थानों में चाहे यज्ञ-सत्संग, सेवा आदि के कार्य हों, अथवा शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक रूप से सबल बनाने हेतु व्यायाम प्रशिक्षण देना हो, आर्य समाज से संबंधित शिक्षा देनी हो या आवश्यकता अनुसार सेवा कार्य करने हों, ये हमेशा तत्पर रहते हैं। इन समस्त युवा सम्वर्धकों को उचित वेतन, आने-जाने के लिए व्हीकल, फोन, स्वास्थ्य संरक्षण आदि की सारी सुविधाएं सभा द्वारा प्रदान की जाती हैं।

हमारी भावना और कामना

सम्वर्धकों को आर्य समाज के सेवा क्षेत्र में उतारने से पूर्व आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली के प्रांगण में लगातार प्रशिक्षण दिया जाता है, उसके उपरांत परीक्षण करके ही इन्हीं के कार्य क्षेत्र में भेजा जाता है। जिससे वे वैदिक धर्म, आर्य समाज की शिक्षाओं को आगे बढ़ा सकें, स्कूलों में वैदिक ज्ञान व शारीरिक व्यायाम द्वारा चरित्र निर्माण और आर्यवीर दल की शाखाओं का संचालन कर युवा पीढ़ी को आर्यसमाज से जोड़ें, उन्हें सुदिशा दें, गरीब परिवारों एवं झुगी-झोपड़ियों में जाकर यज्ञ करें इत्यादि।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर लगातार हो रहा वेद प्रचार

वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से जुड रहे हैं- प्रतिदिन सैकड़ों लोग

युवा पीढ़ी को नशामुक्त बनाओ, यौवन बचाओ, रिश्ते बचाओ, गले लगाओ, मोटा अन्न प्रयोग में लाओ, पर्यावरण को शुद्ध बनाओ, महिला सशक्तिकरण और आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान सफलता पूर्वक बढ़ रहा है आगे

पृष्ठ 1 का शेष

ग्रीष्मकालीन शिविरों में अधिकाधिक भाग ले युवा शक्ति

है। अगर किसी की सुबह ही आलस्य से भरी हुई हो, उदासी से भरपूर हो तो फिर उसका पूरा दिन चिंता में बीत जाता है। इसलिए आर्यवीर दल और वीरांगना दल के शिविर में बच्चों को सुबह जल्दी उठकर, योगासन, व्यायाम, प्राणायाम, लाठी, भाला, तलवार, जूडो-कराटे, स्तूप, मलखम, कदमताल इत्यादि की शिक्षा देकर अभ्यास कराया जाता है। इसके उपरांत संध्या, हवन करना-कराना भी सिखाया जाता है।

पौष्टिक आहार, भोजन

शिविर में सभी शिविरार्थियों के लिए शुद्ध, सात्विक, पौष्टिक भोजन में प्रातः काल नाश्ते से लेकर दोपहर का भोजन, रात्रि का भोजन, दूध, फल इत्यादि सभी चीजों का पूरा ध्यान रखा जाता है। भोजन के स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थ्य वर्धक भी हो इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। सभी बच्चे जब सुबह शाम सुयोग्य अनुभव प्राप्त शिक्षकों के निर्देशन में व्यायाम प्राणायाम करते हैं तो उन्हें पर्याप्त भूख भी लगती है और वे रुचि पूर्वक भोजन करते हैं और स्वस्थ रहते हैं।

बौद्धिक कक्षाओं का सकारात्मक प्रभाव

आजकल हमारे बच्चे क्या सीख रहे हैं और हम उन्हें क्या सिखा रहे हैं, यह हमें अवश्य सोचना विचारना चाहिए। जिन खेतों में बीज नहीं बोए जाते वहां खरपतवार तथा झाड़ झंखाड उग ही जाते हैं। अतः शिविर में बच्चों को ऐसे शिक्षाप्रद संस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिनसे उन्हें जीवन भर संपोषण प्राप्त होता है। और ये सभी शिक्षाएं, संस्कार बच्चों को खेल खेल में सिखाए जाते हैं। वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, विशेषज्ञों द्वारा दिए गए संस्कार बच्चों को महान धरोहर के रूप में प्राप्त होते हैं, जो उनके जीवन भर काम आते हैं। शिविर में भाग लेने वाले बच्चे मातृ-पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, राष्ट्र भक्त बनकर अपना, अपने माता-पिता का और देश का नाम रोशन करते हैं।

शिविर के उद्घाटन और समापन समारोह में भाग लें सभी आर्यजन

10 या 8 दिनों के शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर शिविरार्थी जिस समय समापन समारोह में व्यायाम प्रदर्शन में सहभागी बनते हैं तो उनके उमंग, उत्साह से चमकता चेहरा देखने दिखाने लायक होता है। बैंड बाजों और संगीत की धुन पर करतब दिखाते आर्य वीर, वीरांगनाओं का संतुलित व्यक्तित्व एक अनोखा आदर्श प्रस्तुत करता है। उस समय आर्य वीर, वीरांगनाओं के माता-पिता और उपस्थित जनसमूह रोमांचित होकर उन्हें आशीर्वाद देता है। वे पल बड़े भावुक और मनोहारी होते हैं। अतः सार्वदेशिक और प्रांतीय आर्यवीर दल एवं वीरांगना दल के शिविरों में अपने बच्चों को भेजें और उद्घाटन और समापन समारोह में अवश्य पधारें। इस अवसर पर शिविर के लिए तन, मन, धन से सहयोग भी अवश्य प्रदान करें।

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

1000 आर्य वीरों का 10 दिवसीय आवासीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थान एवं दिनांकः- डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद (26 मई से 4 जून 2023)

उदघाटन एवं समापन समारोहः- 27 मई 2023 उदघाटन सायं 5 बजे एवं 4 जून 2023 समापन समरोह सायं 4 बजे

शिविरार्थियों हेतु निर्देशः ❖ शिविरार्थियों की आयु 21 वर्ष से अधिक हो। ❖ शिविर शुल्क 300/- रुपये प्रति शिविरार्थी होगा। ❖ शिविरार्थी फार्म 20 मई तक शिविर शुल्क के साथ कार्यालय में जमा करवाएं ❖ शिविरार्थी अपने साथ कोई कीमती सामान न लाएं। ❖ शिविरार्थी भोजन के लिए थाली, गिलास, चम्मच, कटोरी, ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाएं। ❖ खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद मोजे व जूते, दल की टोपी, लंगोट, लाठी, टार्च साथ लाएं। गणवेश की उपलब्धता शिविर स्थल पर भी रहेगी।

निवेदकः-

जगवीर आर्य	बृहस्पति आर्य	सुन्दर आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	एस.के. शर्मा	अजय सहगल	बृजेश आर्य
संचालक	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	प्रधान	महामंत्री	महामंत्री	सचिव	अधिष्ठाता
	9990232164	9899008054	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा		

युवा शक्ति के चरित्र निर्माण हेतु इस विशाल शिविर में सहयोग हेतु (आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश) के नाम नकद, चेक या यूनियन बैंक खाता संख्या 520101253203127, IFSC Code UBIN0901415 शाखा कनॉट प्लेस में सीधे जमा कराकर 9899008054, 9990232164 पर सूचित कर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 16 से 23 जून 2023

स्थानः- आर्ष महाविद्याल कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली- 110040

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की इकाई सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 16 से 24 जून 2023 तक कन्या गुरुकुल नरेला में लगाया जायेगा जिसमें आर्य वीरांगनाओं को शाखानायक श्रेणी की शारीरिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः 600/- रुपये।

आवश्यक सामानः गणवेश सफेद कुर्ता, सलवार, सफेद मोजे व जूते, केसरिया चुन्नी, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान पाठय पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आर्य वीरांगना आर्य वीरांगना दल अथवा आर्य समाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, अपना पासपोर्ट फोटो, आधार कार्ड की फोटोकापी भी लायें। जिन्होंने आर्य वीरांगना दल की प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की है, उन्हीं को प्रवेश मिलेगा। अपने साथ कीमती सामान न लायें।

मार्गः पुरानी दिल्ली से 131, 136 नम्बर बस पकड़कर कन्या गुरुकुल पहुंचें। दिल्ली से रेल द्वारा नरेला रेलवे स्टेशन से टैम्पो द्वारा कन्या गुरुकुल पहुंचें।

सम्पर्क करें

सोमवीर शास्त्री	आचार्य सविता	चौधरी देवीसिंह मान
महामंत्री	आचार्या	प्रधान
9999299300	9999655363	

सार्वदेशिक आर्यवीर दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 01 से 15 जून 2023

स्थानः- गुरुकुल विश्वभारती भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक- 124001 (हरियाणा)

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

इस शिविर में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी को शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः उप व्यायाम व व्यायाम शिक्षक 1000/- रुपये, शाखानायक 800/- रुपये।

आवश्यक सामानः खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद मोजे व जूते, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान। पाठय पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

शिविर में अनुशासन का पालन अनिवार्य होगा। अनुशासन न मानने वाले शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकेगा।

अपने साथ कीमती सामान न लायें।

सम्पर्क करें

आचार्य हरिदत्त उपाध्याय	स्वामी देवव्रत सरस्वती	सत्यवीर आर्य
शिविर संयोजक	शिविराध्यक्ष	प्रधान संचालक
	9868620631	9417489461
आचार्य नन्दकिशोर		प्रवीण शास्त्री स्वामी
शिविर प्रबन्धक		प्रधान व्यायाम शिक्षक
9466436220		9467071733

Sun, Earth, other Planets, Day, Night, Year and Seasons

According to the Vedas, as shown already, the sun, as Virat or nebula, originates the earth and other planets, and it is going to be shown presently that, as the rounded off or finalised sun, it keeps up the entire solar system in all essentials. The rays of the sun provide light, heat, vitamins, juice, fertility, wind, monsoon, rain, day, night, months, seasons, etc., to all its planets. The earth and the rest of the planets, as shown already, keep to their respective assigned positions through the force of the solar-planetary gravitation, the sun attracting them, and vice-versa.

The earth and the rest of the planets rotate on their respective axes, with their satellites revolving round them on fixed orbits, and go round and round the sun on their respective fixed orbits. The portions of theirs, coming in front of the sun receive light through the rays of the sun, which travel straight. This phenomenon is termed day. And the portions of the planets away from the direction of the sun's rays, not receiving the same, are in darkness. This phenomenon is termed night. According to the Vedas, as supported by the science of astronomey, days and nights are just phenomena, and not created things, as asserted in the Semitic sacred literatures.

Confining now to the sun, the earth and the moon, it may be noted that the bright side of the moon receives the sun rays falling on it and conceives them in its craters, which, after the lapse of about ten hours, reflects them on the dark portions of the earth, coming in front of the moon. This results in the bright, moon-lit or mooned night on the earth. The scorching rays of the sun, after having been conceived in the moon's craters for about ten hours, become mild, cool and pleasant. According to the Vedas and the post-Vedic literature, the moon is stated to be the highest representative of the power of conception or Rayi, and the sun, the highest representative of that of generation or Pran.

Through the action of the rays of the sun on the waters of ocean and seas, evaporation takes place. The fine particles of water vapour, being lighter than the thick layers of atmosphere touching the earth's surface on land and water, ascend high up in the sky, and when they get cool, they form into clouds and naturally have a tendency to come down on the earth and give rain.

Similarly, the sun's rays, falling direct on the tropical regions of the earth, rarefy the atmospherie air there, which naturally ascends to the higher atmospheric regions creating a sort of vacuum, to fill up which the cold air from the polar regions rush up to the tropies. This results in blowing of winds. The winds, saturated with water vapours and water of the clouds, following certain natural geographical channels, constitute monsoon bringing down rain in the rainy season.

The sun itself moves about 23 degrees north and south. The sun's rays, which, due to its disposition in space, should fall directly on the equator, on account of the above change in its disposition, fall, during certain times of the year, on the tropic of cancer and the tropic of capricorn about 23.27 -degrees to the north and the south of the equator respectively. On the 21st of March and the 23rd of September,the sun rays fall direct exactly on the equator, when day and night are of equal duration. But on the 21st June and the 21st December, the sun rays fall direct on the tropic of cancer and the tropic of capricorn respectively, resulting in the longest day and the shortest night in the northern hemisphere and the shortest day and the longest night in the same hemisphere respectively. The position is just the reverse in the southern hemisphere. The longest and shortest days in a hemisphere represent the midsummer and the midwinter respectively.

As the earth revolves round the sun on its fixed orbit rotating on its axis, various months and seasons with days and nights are caused. The period taken by the earth's complete revolution right round the sun constitutes a year.

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद
नरक-विद्या-अविद्या -सत्यपुरुष-सत्संग

15-नरक

जो विशेष दु:ख और
दु:ख-साधन होते प्राप्त ।
उसको कहते 'नरक' हैं,
ऋषि, मुनि चिन्तक आप्त ।।20।।

16-विद्या

प्रभु से भू तक तत्व का
सत्य ज्ञान, उपयोग ।
जिससे हो 'विद्या' वही,
जानें सबही लोग ।।21।।

17-अविद्या

जो विद्या विपरीत भ्रम,
अन्धकार, अज्ञान ।
उसे 'अविद्या' जानकर,
रहते दूर सुजान ।।22।।

18-सत्पुरुष

सत्यप्रिय धर्मात्मा,
सबके हितकर धन्य ।
वही महाशय मान्य हैं शुचि
'सत्पुरुष' अनन्य ।।23।।

19-सत्संग

जिससे मिथ्या त्याग कर
चढ़े सत्य का रंग ।
उसको ही सब जानिए मित्रों,
शुभ 'सत्संग' ।।24।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

मन घड़न्त गायत्री

पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज अपने व्याख्यानों में अविद्या की चर्चा करते हुए निम्न घटना सुनाया करते थे। रोहतक जिला के रोहणा ग्राम में एक बड़े कर्मठ आर्यपुरुष हुए हैं। उनका नाम था मास्टर अमर सिंहजी। वे कुछ समय पटवारी भी रहे। किसी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज को बताया कि मास्टरजी को एक ऐसा गायत्री मन्त्र आता है जो वेद के विख्यात गायत्री मन्त्र से न्यारा है। स्वामीजी महाराज गवेषक थे ही। हरियाणा की प्रचार यात्रा करते हुए जा मिले मास्टर अमरसिंह जी से।

मास्टरजी से निराला 'गायत्री मन्त्र' पूछा तो मास्टरजी ने बताया कि उनकी माताजी भूतों से बड़ा डरती थी। माता का संस्कार बच्चे पर भी पड़ा। बालक को भूतों का भय बड़ा तंग करता था। इस भयरूपी दु:ख से मुक्त होने के लिए बालक अमरसिंह सबसे पूछता रहता था कि कोई उपाय उसे बताया जाए। किसी ने उसे कहा कि इस दु:ख से बचने का एकमात्र उपाय गायत्री मन्त्र है। पण्डितों को यह मन्त्र आता है। मास्टरजी तब खरखोदा मिडिल स्कूल में पढ़ते थे। वहाँ एक ब्राह्मण अध्यापक था। बालक ने अपनी व्यथा की कथा अपने अध्यापक को सुनाकर उनसे गायत्री मन्त्र बताने की विनय की। ब्राह्मण अध्यापक ने कहा कि तुम जाट हो, इसलिए तुम्हें गायत्री मन्त्र नहीं सिखाया जा सकता। बहुत आग्रह किया तो अध्यापक ने कहा कि छ: मास हमारे घर में हमारी सेवा करो फिर गायत्री मन्त्र सिखा दूँगा।

बालक ने प्रसन्नतापूर्वक यह शर्त मान ली। छ: मास जी भरकर पण्डितजी की सेवा की। जब छ: मास बीत गये तो अमरसिंह ने गायत्री मन्त्र सिखाने के लिए पण्डितजी से प्रार्थना की। पण्डितजी का कठोर हृदय अभी भी न पिघला। कुछ समय पश्चात् फिर अनुनयविनय की। पण्डितजी की धर्मपत्नी ने भी बालक का पक्ष लिया तो पण्डितजी ने कहा अच्छा पाँच रुपये दक्षिणा दो फिर सिखाएँगे।

बालक निर्धन था। उस युग में पाँच रुपये का मूल्य भी आज के पाँच सौ से अधिक होगा। बालक कुछ झूठ बोलकर कुछ रूठकर लड़-झगड़कर घर से पाँच रुपये ले आया। रुपये लेकर अगले दिन पण्डितजी ने गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी। उनका 'गायत्री मन्त्र' इस प्रकार था-

'राम कृष्ण बलदेव दामोदर
श्रीमाधव मधुसूदरना।
काली-मर्दन कंस-निकन्दन
देवकी-नन्दन तव शरना।
ऐते नाम जपे निज मूला
जन्म-जन्म के दु:ख हरना।

बहुत समय पश्चात् आर्यपण्डित श्री शम्भूदत्तजी तथा पण्डित बालमुकन्दजी रोहणा ग्राम में प्रचारार्थ आये तो आपने घोषणा की कि यदि कोई ब्राह्मण गायत्री मन्त्र सुनाए तो एक रुपया पुरस्कार देंगे, बनिए को दो, जाट को तीन और अन्य कोई सुनाए तो चार रुपये देंगे। बालक अमरसिंह उठकर बोला गायत्री मन्त्र तो आती है, परन्तु गुरु की आज्ञा है किसी को सुनानी नहीं। पण्डित शम्भूदत्तजी ने कहा सुनादे, जो पाप होगा मुझे ही होगा। बालक ने अपनी 'गायत्री मन्त्र' सुना दी।

बालक को आर्योपदेशक ने चार रुपये दिए और कुछ नहीं कहा। बालक ने घर जाकर सारी कहानी सुना दी। अमर सिंहजी की माता ने पण्डितों को भोजन का निमन्त्रण भेजा जो स्वीकार हुआ। भोजन के पश्चात् चार रुपये में एक और मिलाकर उसने पाँच रुपये पण्डितों को यह कहकर भेंट किए कि हम जाट हैं। ब्राह्मणों को दिया नहीं लिया करते। तब आर्यप्रचारकों ने बालक अमरसिंह को बताया कि जो तू रटे हुए है, वह गायत्री मन्त्र नहीं, हिन्दी का एक दोहा है। इस मनघड़न्त गायत्री मन्त्र से अमरसिंह का पिण्ड छूटा। प्रभु की पावन वाणी का बोध हुआ। सच्चे गायत्री मन्त्र का अमर सिंहजी ने जाप आरम्भ किया। अविद्या का जाल तार-तार हुआ। ऋषि दयानन्द की कृपा से एक जाट बालक को आगे चलकर वैदिक धर्म का एक प्रचारक बनने का गौरव प्राप्त हुआ। केरल में भी एक ऐसी घटना घटी। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य नरेन्द्रभूषणजी विवाह होने तक एक ब्राह्मण द्वारा रटाए जाली गायत्री मन्त्र का वर्षों पाठ करते रहे।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

क्या है, 'द केरला स्टोरी' इसको देखना क्यों है जरूरी?

विजयन ने पहले एक बयान में कहा था कि फिल्म जानबूझकर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण पैदा करने और केरल के खिलाफ नफरत फैलाने के उद्देश्य से बनाई गई थी। इस बीच, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि हाल ही में रिलीज हुई फिल्म को राज्य में कर मुक्त कर दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि 'द केरला स्टोरी' "लव जिहाद, धर्म परिवर्तन और आतंकवाद की साजिश को उजागर करती है।"

असल में इस फिल्म में भारत के केरल राज्य में 32 हजार लड़कियों के गायब होने की कहानी है जो एक बार जाने के बाद अपने घर वापस नहीं लौट सकी। यह आंकड़ा बीते 12 सालों का बताया जा रहा है। द केरल स्टोरी के टीजर में केरल के पूर्व मुख्यमंत्री वी.एस. अच्युतानंदन कहते हैं की केरल को एक मुस्लिम राज्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं और आने वाले 20 सालों में केरल मुस्लिम राज्य होगा। केरल से जितनी भी लड़कियां गायब हुई वो आई.एस.आई.एस. को या युद्धग्रस्त इस्लामिक क्षेत्रों में तस्करी कर दी गई। केरल में हिंदू और ईसाई समुदाय की लड़कियों को ही सोच समझकर निशाना बनाया जा रहा है।

जो भी लड़कियां गायब हुई हैं उनका जबरन धर्म परिवर्तन और आई.एस.आई.एस. के लड़ाकों से शादी का भी दावा किया जा रहा है और उनकी जबरन शादी करवाई जा रही है। ये सब पता होने के बाद भी सरकार कोई सही प्रतिक्रिया में नजर नहीं आ रही है ना तो लड़कियों की तस्करी करने वालों के खिलाफ और ना ही आई.एस.आई.एस. के खिलाफ। यह सब केरल को एक इस्लामिक राज्य बनाने के लिए किया जा रहा है और वहां हिंदुओं पर जुल्म की कई घटनाएं सामने आती रहती हैं। इन सबमें एक इस्लामिक कट्टरपंथी समूह पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया का नाम सामने आया है।

फिल्मकार ने इसे एक सच्ची घटना के तौर पर पेश किया है। शुरुआत में ही 'असल जीवन की पात्र' निमाह पर्दे पर इस मैसेज के साथ आती है कि, 'मेरे साथ कई बार रेप किया गया और बुरी तरह प्रताड़ित किया गया। इस मूवी में उसका कुछ ही हिस्सा दिखाया गया है। मैं इस फिल्म का स्वागत करती हूं क्योंकि यह संदेश सभी तक पहुंचना चाहिए। मैं नहीं चाहती कि जो मेरे साथ हुआ है, वह किसी और लड़की के साथ हो।' फिल्म में मुस्लिम किरदारों को डार्क शेड में दिखाया गया है। कम्युनिस्टों के साथ भी कोई बहुत अच्छा बर्ताव नहीं हुआ। बार-बार कैमरा एक दीवार पर फोकस करता है, जिस पर लिखा है, 'राष्ट्रवाद हराम है, तुम्हारी पहचान मुस्लिम है।' पूरी फिल्म का ट्रीटमेंट बॉलीवुड स्टाइल में है, लेकिन उस तरह का पैनापन नहीं दिखता। फिल्म पर बैन के लिए दायर याचिका को खारिज करते हुए केरल हाई कोर्ट ने जो टिप्पणी की, उससे बेहतर कुछ और इसकी व्याख्या नहीं कर सकता। अदालत ने कहा कि इस तरह की फिल्म मुश्किल से ही राज्य के सेक्युलर ताने-बाने को नुकसान पहुंचा सकती है।

'द केरल स्टोरी' की कहानी चार लड़कियों पर आधारित है। इसमें शालिनी एक पारंपरिक हिंदू परिवार से आती है। गीतांजलि मेनन एक कम्युनिस्ट परिवार से है और तीसरी लड़की है निमाह। ये सभी कासरगोड के नर्सिंग कॉलेज में दाखिला लेती हैं। मलप्पुरम की आसिफा चौथी किरदार है, जो इन लड़कियों से दोस्ताना व्यवहार करती है। फिल्म इस दृश्य के साथ खत्म होती है, जहां आसिफा और बाकी तीन लड़कियां हॉस्टल के कमरे में साथ दिखती हैं। यह अंत संकेत देता है कि केरल में अब भी धर्म परिवर्तन जारी है और आई.एस.आई.एस. जैसे आतंकी संगठन साजिश में लगे हुए हैं।

'द केरल स्टोरी' के सच्ची घटना पर आधारित होने का दावा किया गया है, निमाह कहती भी है कि केरल में करीब 30 हजार लड़कियां आतंकी और चरमपंथी संगठनों के चंगुल में फंसी हुई हैं। वह बताती है कि एक पूर्व मुख्यमंत्री भी कह चुके हैं कि चरमपंथी संगठन केरल को इस्लामी राज्य बनाना चाहते हैं। निमाह के कैरेक्टर की तरह गीतांजलि के माता-पिता भी मूवी के आखिर में दिखाए जाते हैं और उनका संदेश होता है, 'जिस शख्स ने हमारी बेटी का शोषण किया, उसके खिलाफ हम कुछ कर नहीं पाए। कम से कम उसकी तस्वीर फिल्म में दिखाई जाए ताकि दूसरे लोग सावधान हो सकें।'

फिल्म पर विवाद शुरू हुआ इसके ट्रेलर के साथ, जिसमें दिखाया गया कि केरल की करीब 32 हजार लड़कियों ने आई.एस.आई.एस. जॉइन कर लिया है। फिल्म में भी कई सीन हैं, जिनमें मुस्लिमों और कम्युनिस्टों के टारगेट का पता चलता है। ऐसा एक सीन है, जब शालिनी कासरगोड के नर्सिंग कॉलेज में पहली बार जाती है, तो वहां एक स्लोगन लिखा दिखता है, फ्री कश्मीर। हालांकि अगले सीन में बुरका पहने एक महिला आती है, जो कॉलेज की हेड है और वह इस तरह के स्लोगन के लिए फटकार लगाती है कि भारत जैसे मुल्क में इस तरह की गतिविधियां बर्दाश्त नहीं की जाएंगी। इसी तरह, अपने प्यार द्वारा धोखा दिए जाने और ब्लैकमेल किए जाने पर गीतांजलि आत्महत्या कर लेती है। खुद को खत्म करने से पहले वह अपने पिता को दोष देती है कि अपनी विचारधारा और अपने धर्म के बारे में सिखाने के बजाय उन्होंने कम्युनिज्म की विदेशी विचारधारा सिखाई। ऐसा लगता है कि मूवी यह दिखाने का प्रयास कर रही है, जो धर्म पर विश्वास नहीं रखते उन्हें बरगलाना ज्यादा आसान होता है।

-संपादक

अधिकांश रूप से यह अनुभव किया जाता है कि स्थान विशेष पर या समय विशेष पर वैदिक सूक्तियों और प्रेरक सुभाषितों की आवश्यकता होती है। जैसे स्कूल में, गौशाला में, आश्रमों में, खेल के स्थानों पर, पर्व, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन, प्रभात फेरी, शोभायात्रा आदि में प्रेरणाप्रद प्रमाणिक वाक्य लिखने के लिए हम समय-समय पर विचार करते हैं। किन्तु उस समय पर हमें वह उपयोगी मैटर मिल नहीं पाता। अतः आर्य संदेश के सुधी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त वचनों के प्रचार-प्रसार हेतु हमने एक नियमित कालम प्रारम्भ किया है। जिसमें हर बार कुछ सूक्तियां निरंतर प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

-संपादक

वैदिक सूक्तियां

27- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष
धर्मार्थकामोक्षणाम सद्यः सिद्धिर्भवेन्न
-अ० स० गु० प्र० से०-11
(हे परमात्मा! हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होवे।)

28- संन्यासी
चतुर्थो मानुषो भागं त्यक्त्वा संगान्परिव्रजेत
-स० प्र० चतुर्थ समुल्लास
(आयु के चौथे भाग में संगो को छोड़कर परिव्राट अर्थात संन्यासी हो जावे।)

29- जन्म-मृत्यु
बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात
-ऋ०-07-59-12
(हे परमात्मा! हम जन्म मृत्यु के बंधन से छूटे।)

30- ईश्वर
क्लेशकर्मविपाकाश्यैरपरामृष्ट पुरुषविशेष ईश्वरः
-योग 01-24
(अविद्यादि पांचो क्लेश व शुभाशुभ कर्मो से रहित और पुरुषों में विशेष है वह ईश्वर है।)

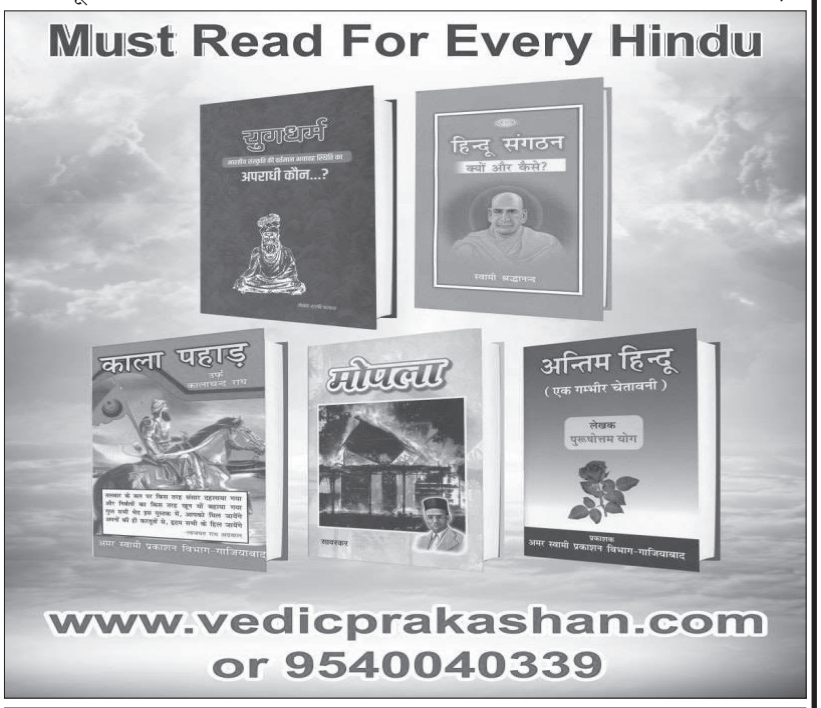

शोक समाचार

श्रीमती वर्षा आर्या जी का निधन

आर्य समाज के अधिकारी एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री राजेश आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती वर्षा आर्या जी का 1 मई 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 4 मई 2023 को शक्तिपीठ मन्दिर सेक्टर-14 गुरुग्राम में संपन्न हुई। जिसमें क्षेत्रीय आर्यजनों सहित दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री प्रमोद कुमार जी का निधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के कार्यालय व्यवस्थापक श्री जयप्रकाश शास्त्री जी के साढूभाई श्री प्रमोद कुमार जी का हृदय गति रुकने से निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके गांव हिम्मतपुर काकामई, जिला एटा में किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 15 मई को उनके पैतृक गांव में संपन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 08 मई, 2023 से रविवार 14 मई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 10-11-12 मई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 10 मई, 2023

अंतर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस 3 मई 2023

आर्य समाज के सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई -सुरेश चन्द्र आर्य

प्रधान, सार्वदेशिक सभा

भारत के कोने-कोने में और विदेशों में सभी आर्य परिवारों, आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों, अनाथालयों और समस्त आर्य सेवा प्रतिष्ठानों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों द्वारा 3 मई 2023 को प्रातः काल 6 बजे से 9 बजे के बीच एक साथ लाखों की संख्या में यज्ञों के सफल आयोजन किए गए, इसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई।

आर्य समाज की युवा पीढ़ी और विशेषकर आर्य परिवारों के बच्चों का उत्साह पूर्वक वेद मंत्रों का पाठ करना, यज्ञ में आहुति देना और पूरे विधि-विधान से यज्ञ संपन्न करना अपने आपमें एक विशेष उपलब्धि है। इस तरह यज्ञ के प्रचार-प्रसार और विस्तार से जहां आर्य समाज लगातार आगे बढ़ रहा है, वहीं वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से मानव समाज प्रेरित हो रहा है। मैं सभी याज्ञिक बच्चों को और युवाओं को शुभकामनाएं और बधाई देता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और संदेशों को आत्मसात करते हुए आर्य समाज परिवार के बच्चे निरंतर उन्नति, प्रगति और सफलता प्राप्त करें और संपूर्ण जगत को आर्य बनाने में अपना योगदान दें। सभी को पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रतिष्ठा में,

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन संपन्न

श्री योगमुनि जी प्रधान | श्री राजेंद्र दिवे जी मंत्री | श्री उग्रसेन राठौर जी कोषाध्यक्ष

दिनांक 23 अप्रैल 2023 को आर्य समाज परली में 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन अधिवेशन' सभा के संरक्षक/पूर्व प्रधान/ 106 वर्षीय तपस्वी व्यक्तित्त्व पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती महाराज' की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। शेष कार्यकारीणी का गठन निम्न प्रकार किया गया। कार्यकारी प्रधान- श्री माधवराव जी देशपांडे, उपप्रधान- श्री दयारामजी बसैये, उपप्रधान- श्री प्रमोदकुमार जी तिवारी, उपप्रधान- श्री लखमसीभाई वेलानी, उपप्रधान- श्री ओमप्रकाशजी पाराशर, उपमंत्री- श्री शंकरराव जी बिराजदार, उपमंत्री- प्रा. अर्जुनरावजी सोमवंशी, उपमंत्री- श्री विजयकुमार जी कानडे, उपमंत्री- श्रीमती गंगाबाई मारमपल्ले जी चुने गए।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, के नवनिर्वाचित सभी अधिकारियों एवं चयनित नयी कार्यकारिणी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई।

ओ३म्

असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता प्रचार एवं विशेष संस्करण

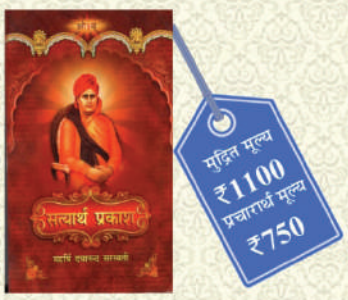

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

Available on vedicprakashan.com and amazon bit.ly/vedicprakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj.org

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह